डॉ भीमराव आंबेडकर की बौद्ध धम्म (धार्मिक) विचारधारा का दलितों पर प्रभाव: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (आगरा जनपद के विशेष संदर्भ में)

समाजशास्त्र में पी.एच.डी उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु

प्रस्तावित रूपरेखा

शोधकर्त्री

नंदिनी

शोध निर्देशक

प्रो. लजवंत सिंह

समाजशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान विभाग, समाज विज्ञान संकाय

दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा- 282005

2024

प्रस्तावना

वर्तमान भारतीय समाज में दलित वर्ग के लोगों में धर्म परिवर्तन के प्रति आकर्षण देखने को मिल रहा है। धर्मांतरण की प्रक्रिया सदियों से चली आ रही है। मुगल काल में मुस्लिम शासकों ने लोगों का जबरन एवं प्रलोभन से मुस्लिम धर्म में धर्मांतरण कराया था। इसके बाद ईसाई मिशनरियों ने भी लोगों को ईसाई धर्म अपनाने के लिए प्रेरित किया। इसी प्रकार लोगों के बीच धर्मांतरण की प्रक्रिया चलती रही। इस तरह ही हिन्दू धर्म की कमियों को देखते हुए एवं अपने जीवन में भेदभाव, उपेक्षा तथा अन्याय सहन करने के उपरांत डॉ भीमराव आंबेडकर ने धर्म परिवर्तित करने की घोषणा की थी। हिन्दू धर्म में वर्ण व्यवस्था के कारण उच्च वर्ण के लोग निम्न वर्ण के लोगों पर अत्याचार करते थे। निम्न वर्ण के लोगों को किसी भी प्रकार के अधिकार तथा अवसरों की सुविधा प्राप्त नहीं थी। अछूतों को कुओं से पानी नहीं भरने दिया जाता था तथा रास्ते से निकलने पर भी प्रतिबंध था। इन सभी प्रकार की यातनाओं को स्वयं महसूस करने वाले डॉ भीमराव आंबेडकर ने हिन्दू धर्म छोडने का ऐलान कर दिया था। दिनांक 13 अक्टूबर, सन 1935 को येवला में उन्होनें घोषणा कर दी कि “मैं हिन्दू धर्म में पैदा तो हुआ हूँ, लेकिन मैं इस धर्म में मरूँगा नहीं” (कबीरपंथी, 2020)। डॉ आंबेडकर ने सभी धर्मों का गहनता से अध्ययन किया था। उन्होनें प्रत्येक धर्म की अच्छाइयों एवं बुराइयों को बड़ी बारीकी से अध्ययन किया। धर्मांतरण की घोषणा के पश्चात डॉ भीमराव आंबेडकर के पास सभी धर्मों के धर्माचार्य आने लगे और अपने-अपने धर्म की अच्छाइयाँ गिनाने लगे। इन सभी वार्तालापों के पश्चात भीमराव आंबेडकर के खास व्यक्ति नानकचंद रत्तू ने भीमराव आंबेडकर से पूछा कि आप किस धर्म को ग्रहण करेंगे। रत्तू की इस बात पर डॉ भीमराव आंबेडकर ने कहा कि काफी चिंतन-मनन करने के पश्चात मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि मैं बौद्ध धम्म को ग्रहण करूंगा। उन्होनें कहा कि यदि मैं इस्लाम धर्म ग्रहण करता हूँ, तो उसमें ऐसी कई बातें हैं, जो मुझे बिलकुल भी पसंद नहीं हैं। यही बात ईसाई धर्म के विषय में भी है और रही बात सिक्ख धर्म की, तो मैं इसे स्वीकार कर लेता, लेकिन इसमें आत्मा-परमात्मा में आस्था बनी हुई है। माना इसमें मूर्ति पूजा का खंडन किया जाता है, लेकिन उसकी बजाय इस धर्म में गुरुग्रंथ में मूर्ति पूजा की तरह ही लोगों का विश्वास बना हुआ है। इसलिए मैंने सिक्ख धर्म को भी अपनाने का विचार पूरी तरह त्याग दिया है। बौद्ध धम्म को ग्रहण करने के पीछे मुख्य कारण यह है कि इसमें ईश्वर के अस्तित्व को नकारा गया है। बौद्ध धम्म पूरी तरह मानवतावादी, वैज्ञानिकता एवं तार्किकता पर आधारित धम्म है। इसमें जाति-वर्ण, ऊंच-नीच, छूआछूत तथा

भेदभाव आदि का अस्तित्व नहीं है। इसमें सबके साथ मैत्री भाव, करुणा, बंधुत्व आदि सद्गुणों का समावेश है (कबीरपंथी, 2020)। डॉ भीमराव आंबेडकर ने अपने वर्ग के लोगों के उद्धार के लिए धर्मांतरण का रास्ता अपनाया। उन्होनें 14 अक्टूबर, सन 1956 को लगभग पाँच लाख अनुयायियों के साथ धम्म दीक्षा भूमि नागपुर में सामूहिक रूप से बौद्ध धम्म की दीक्षा ग्रहण की। इस ऐतिहासिक सामूहिक धर्मांतरण का महत्व उन्होनें अपने अनुयायियों को समझाया। बौद्ध धम्म ग्रहण करके वे अपने विकास तथा भेदभाव व्यवस्था से स्वतंत्र हो गए और वे सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक रूप से विकसित होने के लिए भी स्वतंत्र हो गए हैं। डॉ भीमराव आंबेडकर के मार्गदर्शन के पश्चात दलितों में चेतना का विकास हुआ और उन्होनें अपने विकास के लिए हिन्दू धर्म का परित्याग करना शुरू कर दिया तथा बौद्ध धम्म की दीक्षा ग्रहण करने लगे। उनकी मृत्यु के पश्चात दलित लोगों के अंदर धर्मांतरण करने की इच्छा और अधिक प्रबल हो गई। पाँच लाख अनुयायियों की संख्या में भी बढ़ोतरी हो गई। यह संख्या उस समय बढ़कर 7,50,000 हो गई। ये धर्मांतरण का कारवां इसी प्रकार चलता रहा। डॉ भीमराव आंबेडकर के मार्गदर्शन से बौद्ध धम्म अपनाने वाले दलितों को नव-बौद्ध की संज्ञा दी गई। परंतु वर्तमान समय में बौद्ध धम्म में परिवर्तित होने वाले लोगों की संख्या में करोड़ों का इजाफा हुआ है क्योंकि इनमें से कुछ अलिखित बौद्ध धम्म ग्रहण करके पूर्णत धम्म स्वीकार कर चुके हैं। अतः अलिखित होने के कारण हिन्दू धर्म के लोग अभी भी इनकी गणना हिन्दू धर्म में ही करते हैं। यदि पुनः इनकी जनगणना की जाए तो बौद्ध धम्म ग्रहण करने वाले लोगों की सटीक जनसंख्या का पता चलेगा। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में बौद्ध अनुयायियों की जनसंख्या 84,42,972 दर्ज की गई है। जिसमें 34,123 नव-बौद्ध की श्रेणी में आते हैं। यह जनसंख्या लिखित रूप से दर्ज की गई है। अलिखित रूप से आज भी लोग बौद्ध धम्म में अपना धर्मांतरण कर रहे हैं। जिन्हें अभी लिखित रूप से जनगणना में शामिल नहीं किया गया है। समाज की प्रकृति परिवर्तनशील होती है। इस परिवर्तन में लोग एक धर्म को छोडकर दूसरे धर्मों में जा रहे हैं। बौद्ध भिक्षुओं के द्वारा दलित वर्ग के लोगों को बौद्ध धम्म ग्रहण करने के लिए निरंतर जागरूक करने का प्रयास किया जा रहा है।

दलित वर्ग का अर्थ एवं परिभाषाएँ

दलित से हमारा तात्पर्य ऐसे व्यक्ति या समुदाय से होता है जो धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा नैतिक अर्थात सभी क्षेत्रों में उपेक्षित और दबा हुआ है। दलित शब्द का प्रचलन 1919 मोंटेयू चेम्सफोर्ड अधिनियम के अंतर्गत

प्रथम बार हुआ (मनीषा, 2019)। महात्मा ज्योतिबा फुले ने 'अतिशूद्र' नाम से संबोधित किया था। डॉ भीमराव आंबेडकर ने 'अछूत' शब्द का उपयोग किया। भारतीय संविधान में अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति शब्द का प्रयोग किया गया है। सन 1984 में बहुजन समाज पार्टी की स्थापना काशीराम के द्वारा की गई उन्होनें इन्हें 'दलित बहुजन' नाम से पुकारा था।

कंवल भारती के अनुसार, "दलित वह है जिस पर अस्पृश्यता का नियम लागू किया जाता है। जिसे कठोर और गंदे कार्य करने के लिए बाध्य किया गया। जिसे शिक्षा ग्रहण करने और स्वतंत्र व्यवसाय करने से मना किया गया और जिस पर सामाजिक निर्योग्यताओं की संहिता लागू की, वही और वही दलित है और इसके अंतर्गत वही जातियाँ आती हैं, जिन्हें अनुसूचित जातियाँ कहा जाता है" (रामचन्द्र, 2012)।

नारायण सूर्वे के अनुसार, "दलित शब्द की मिली-जुली परिभाषाएँ हैं। इसका अर्थ केवल बौद्ध या पिछड़ी जातियाँ ही नहीं, समाज में जो भी पीड़ित हैं, वे दलित हैं" (रामचन्द्र, 2012)।

डॉ भीमराव आंबेडकर के अनुसार, "दलित जातियाँ वे हैं जो अपवित्रकारी होती है" (रामचन्द्र, 2012)।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

प्रत्येक देश में सामाजिक संगठन, विभाजन एवं स्तरीकरण का स्वरूप उसकी अपनी भौगोलिक परिस्थितियों, जीवन की आवश्यकताओं, सांस्कृतिक परम्पराओं और ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया का परिणाम होता है। भारत की सामाजिक व्यवस्था की अपनी एक अनोखी विशेषता है वर्ण व्यवस्था। जो सामाजिक व्यवस्था में एक अद्वितीय स्थान रखती है। इतिहास के पन्नों पर यदि प्रकाश डाला जाए तो वर्ण व्यवस्था के उद्भव की जानकारी ऐतिहासिक साहित्यों से प्राप्त होती है। भारतीय समाज में जो लिखित साक्ष्य जो आज हमारे पास हैं, उनमें सबसे प्राचीन वेद को माना जाता है। वेदों में ऋग्वेद सबसे प्राचीन वेद माना जाता है। सिंधु घाटी सभ्यता की खोज से पूर्व भारत की प्राचीनतम सभ्यता और संस्कृति द्रविड़ अनार्य एवं आर्यों की सभ्यता और संस्कृति को माना जाता था। वर्ण व्यवस्था का सीधा संबंध आर्यों के आगमन से है (चौधरी, 2008)। इससे पहले की सामाजिक व्यवस्था पर प्रकाश डाला जाए तो पुरातात्विक खुदाई के

माध्यम से आर्यों के पहले के समाज का पता चलता है। इससे वर्ण व्यवस्था के इतिहास को जानने की रोचकता और अधिक बढ़ जाती है।

सुवीरा जायसवाल ने अपनी पुस्तक 'कास्ट: ऑरिजन, फंक्शन एंड डायमेंशन्स ऑफ चेंज' में इरावती कर्वे और एस. पी. मलिक को उद्धृत किया है कि "अस्पृश्यता का इतिहास आर्यों से पीछे हड़प्पा की संस्कृति में भी उपलब्ध था। लेकिन इसे सिर्फ हड़प्पा की खुदाई में मिले चित्र से पहचानने की कोशिश की गई है इसलिए इसे ठोस प्रमाण नहीं कह सकते हैं। उसमें भी इरावती कर्वे का कहना है कि चित्र में अनाज छाटने-कूटने का काम करने वाली स्त्री को समाज से अलग दिखाया गया है। इस तरह कहा जाता है कि बहुत हद तक वर्ण व्यवस्था के प्रमाण हड़प्पा में नहीं मिलते हैं" (चौधरी, 2008)। इंडो-आर्यों के आगमन के प्रमाण हमें ऋग्वैदिक काल में देखने को मिलते है। एंड्रोनोवा संस्कृति आर्य जीवन के सभी महत्वपूर्ण तत्वों को दर्शाती है। जिसमें संग्रहण, घोड़े, पहिये का व्यापक उपयोग, अंतिम संस्कार, भोजपत्र एवं अन्य लकड़ियों से निर्मित भूमिगत निवास और सोम पेय शामिल हैं। इसलिए इस संस्कृति को प्रोटो इंडो-ईरानी कहा जाता था। कहा जाता है कि आर्य अफगानिस्तान में बसने आए थे। इसका प्रमाण आर्यों के नाम पर आधारित यहाँ की नदियों से चलता है। प्रारम्भ में आर्य पूर्वी अफगानिस्तान, उत्तर पश्चिम सीमांत प्रांत, पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किनारे वाले भौगोलिक क्षेत्र में रहते थे। सिंधु नदी आर्यों के लिए महत्वपूर्ण नदी थी। पूरा क्षेत्र जहां भारतीय उपमहाद्वीप में आर्य सबसे पहले बसे, उन्हें सात नदियों की भूमि कहा जाता है। ऋग्वेद में 'आर्य' शब्द छत्तीस बार आया है और सामान्यतः यह एक सांस्कृतिक समुदाय का परिचायक है। इसकी भाषा इंडो-आर्यन है (नवीन और कुमार, 2020)। उत्तर वैदिक काल में आर्य शब्द ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र का परिचायक बन गया। इस प्रकार वैदिक आर्यों ने वर्ण व्यवस्था की शुरुआत की। ये व्यवस्था इतनी जटिल हो गई कि इससे शूद्र वर्ण को प्रताड़ित किया जाने लगा। ये प्रताड़ना इतनी अधिक प्रबल हो गई कि शूद्रों का मनमाने ढंग से प्रयोग किया जाने लगा था। इस बदतर जीवन को बदलने के लिए ईसा पूर्व छठी पाँचवी शताब्दी में मध्य गंगा के मैदानी इलाकों में कई धार्मिक संप्रदायों का उदय हुआ। जिसमें बौद्ध धम्म का उदय सबसे शक्तिशाली धार्मिक सुधार आंदोलन के रूप में हुआ।

बौद्ध धम्म के मूल सिद्धान्त

अनीश्वरवाद- बुद्ध ईश्वर में विश्वास नहीं करते, क्योंकि दुनिया प्रतीत्यसमुत्पाद के नियम पर चलती है। प्रतीत्यसमुत्पाद का तात्पर्य कार्य-कारण की शृंखला से है (शर्मा, 2012)।

अनात्मवाद- अनात्मवाद का यह मतलब है कि जिसे लोग आत्मा कहते हैं, वह एक चेतना का अविछिन्न प्रवाह है (शर्मा, 2012)।

क्षणिकवाद- इस ब्रह्मांड में सब कुछ क्षणिक और नश्वर है। कुछ भी स्थायी नहीं होता है। सब कुछ परिवर्तनशील है (शर्मा, 2012)।

चार आर्य सत्य

दुःख, दुःख का कारण, दुःख निरोध, दुःख निरोध का मार्ग।

आष्टांगिक मार्ग

सम्यक दृष्टि:- इसे सही दृष्टि तथा यथार्थ को समझने की दृष्टि कह सकते हैं। सम्यक दृष्टि का अर्थ है कि हम जीवन के दुख और सुख का सही अवलोकन करें। आर्य सत्यों को समझने का प्रयास करें।

सम्यक संकल्प:- जीवन में संकल्पों का बहुत महत्व होता है। यदि दुख से छुटकारा पाना है तो दृढ़ निश्चय कर लें कि आर्य मार्ग पर चलना है।

सम्यक वाक:- जीवन में वाणी की पवित्रता और सत्यता होना आवश्यक है। यदि वाणी की पवित्रता और सत्यता नहीं है तो दुख निर्मित होने में ज्यादा समय नहीं लगता।

सम्यक कर्मात:- कर्म चक्र से छूटने के लिए आचरण की शुद्धि होना जरूरी है। आचरण की शुद्धि क्रोध, द्वेष और दुराचार आदि का त्याग करने से होती है।

सम्यक आजीव:- यदि आपने दूसरों के अधिकारों को छिनकर अन्यायपूर्ण उपाय से जीवन के साधन जुटाये हैं तो इसके बुरे परिणाम भी भुगतने पड़ेंगे, इसलिए न्यायपूर्ण जीविकोपार्जन आवश्यक है।

सम्यक व्यायाम:- ऐसा प्रयत्न करें जिससे शुभ की उत्पत्ति और अशुभ का निरोध हो। जीवन में शुभ के लिए निरंतर प्रयास

करना चाहिए।

सम्यक स्मृति:- चित्त में एकाग्रता का वास होता है। जब हम स्वयं को लालच व स्वार्थी इच्छाओं से दूर रखते हैं। एकाग्रता से विचार और भावनाएं स्थिर होकर शुद्ध बनी रहती हैं।

सम्यक समाधि:- सात मार्ग के अभ्यास से चित्त की एकाग्रता द्वारा निर्विकल्प प्रज्ञा की अनुभूति होती है। यही एकाग्रता धर्म के सच्चे अर्थों तक पहुंचाने का काम करती है।

पंचशील

1) अहिंसा (हिंसा से विरत होना)।

2) अस्तेय (चोरी से विरत होना)।

3) अपरिग्रह (व्यभिचार से विरत होना)।

4) सत्य (झूठ बोलने से विरत होना)।

5) सभी नशा से विरत (शराब के सेवन से विरत होना)।

डॉ भीमराव आंबेडकर का संक्षिप्त परिचय

डॉ भीमराव रामजी आंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल, 1891 को इंदौर जिले की महू छावनी में हुआ था। इनके पिता का नाम रामजी सकपाल व माता का नाम भीमाबाई था। इनके पिता रामजी सकपाल सेना में सूबेदार थे। भीमराव की प्राथमिक शिक्षा सतारा में ही सम्पन्न हुई। सन 1900 में हाई स्कूल में प्रवेश मिला। बचपन से ही भीमराव को अस्पृश्यता का सामना करना पड़ा था। अस्पृश्य छात्रों में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले भीमराव पहले विद्यार्थी थे। डॉ भीमराव आंबेडकर ने अमेरिका से एम.ए., पीएच.डी., लंदन से एम.एससी., डी.एससी. और ग्रेज-इन से बार-एट-लॉ की डिग्रियाँ प्राप्त की थी। लंदन, अमेरिका और जर्मनी में ज्ञान साधना के पश्चात डॉ आंबेडकर ने इस रहस्य को जाना कि “विद्या मनुष्य को शक्ति का मुकुट पहनाती है” (पांडे, 2006)। कोलम्बिया विश्वविद्यालय में उनके शिक्षक जॉन डिवे का उन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। जॉन डिवे के प्रभाव से भीमराव आंबेडकर अस्पृश्यों और दलित वर्गों के उत्थान के लिए शिक्षा की प्रभावशीलता और उपयोगिता को समझ सके और उन्होनें इन वर्गों के उत्थान के लिए इनकी शैक्षणिक और सांस्कृतिक उन्नति को आवश्यक माना था। डॉ भीमराव आंबेडकर ने अपने जीवन काल में अस्पृश्यता की बहुत प्रताड़नाओं

को सहन किया था। दलितों का उन्नति का मार्ग आंबेडकर को बौद्ध में दिखाई दिया। डॉ आंबेडकर ने हिन्दू धर्म को पूरी तरह त्यागने का निर्णय ले लिया था। उन्होनें अध्ययन में पाया कि दलित उद्धार बौद्ध धम्म को ग्रहण करने से ही संभव हो सकता है। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य बौद्ध धम्म वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित है। डॉ आंबेडकर के अनुसार, "बुद्ध ने कहा कि उनके धम्म का आत्मा-परमात्मा से कुछ सरोकार नहीं है। उनके धम्म में मरने के बाद क्या होता है, इसका कोई सरोकार नहीं है। उनके धम्म का कर्म-कांडों के क्रिया-कलापों से भी कोई संबंध नहीं है। बुद्ध के धम्म का केंद्र बिन्दु है इंसान और इस पृथ्वी पर रहते हुए इंसान का इंसान के प्रति क्या कर्तव्य होना चाहिए" (बाली, 2018)। डॉ भीमराव आंबेडकर ने सन 1951 में बौद्ध धम्म से संबन्धित एक पुस्तक लिखी जिसका नाम "भगवान बुद्ध और उनका धम्म" है। इस पुस्तक में आंबेडकर ने बुद्ध धम्म को गहनता से स्पष्ट किया है। डॉ भीमराव आंबेडकर ने दलितों के उद्धार के लिए बौद्ध धम्म को ग्रहण किया था, जिससे दलितों के विकास में कोई बाधा न आए। उनके साथ किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव न किया जा सके। उनका कहना था कि बौद्ध धम्म पूरी तरह मानवतावादी है। इसमें जाति-वर्ण, ऊंच-नीच, छुआछूत, भेदभाव आदि का बोलबाला नहीं है। इन सबके साथ-साथ मैत्री, करुणा तथा बंधुत्व आदि सद्गुणों की बहुतायत है (कबीरपंथी, 2020)। धम्म परिवर्तन और बौद्ध धम्म में वापसी का सिलसिला महाराष्ट्र में सबसे अधिक जारी रहा है और मुख्यतः तीन जातियों मांग, चर्मकार और महार इसके प्रभाव में आए हैं। मुंगेकर के अनुसार, उत्तर भारत में उन बहुजन जातियों के भीतर भी जो अब तक हिन्दू धर्म में बनी हुई हैं, उनका डॉ भीमराव आंबेडकर के लिए अपार श्रद्धा है। आकाश बलवंत मून के अनुसार, बौद्ध धम्म स्वीकार करने वाले दलितों और बहुजनों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति हिन्दू धर्म में बने रहने वाले उनकी जाति के लोगों की तुलना में बेहतर दर्ज की गई है।

सैद्धांतिक रूपरेखा

अधीनस्थ समूह परिप्रेक्ष्य:- अधीनस्थता के अंतर्गत जाति, आयु, लिंग, पद तथा वर्ग आदि को शामिल किया जाता है। प्रतिरोध तथा अपने आपको समर्पित करने की भावनाएं इसके साथ जुड़ी हुई है। निम्न वर्ग के लोगों की भावनाएं इसमें निहित है। इसमें निम्न वर्ग के लोगों का अध्ययन तथा अवलोकन किया जाता है। इस परिप्रेक्ष्य में इतिहास की समीक्षा

को एक नए दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया जाता है। इस परिप्रेक्ष्य में मुख्यता बी.आर. आंबेडकर, रणजीत गुहा, डेविड हार्डीमेन, कपिल कुमार आदि आते हैं। इस समूह के प्रवर्तक यह सिद्ध करना चाहते हैं कि अब तक जो इतिहास लिखा गया है वह सिर्फ राष्ट्रवाद और श्रेष्ठजन का वर्णन करता है। कमजोर वर्गों की आवाजों को भी इतिहास में सम्मिलित करना चाहिए। आंबेडकर ने अधीनस्थ समूह परिप्रेक्ष्य के माध्यम से उन सारी व्यवस्थाओं को देखा था जो शास्त्रों से पैदा हुई थी। उन्होनें अपनी पुस्तक 'एनहिलेशन ऑफ कास्ट' में लिखा है कि ये शास्त्र हिन्दू धर्म के अंग नहीं थे बल्कि वे नियम सूची थे, जिनके आधार पर नीची जातियों के मूलभूत जीवन की आवश्यकताओं को नकार दिया गया था और समाज में उन्हें समान प्रस्थिति से वंचित रखा गया था। इसमें ज्योतिराव फुले और रामास्वामी नायकर का अधीनस्थ समूह परिप्रेक्ष्य भी सम्मिलित था।

धर्म का सिद्धान्त:- धर्म का शाब्दिक अर्थ होता है, 'धारण करने योग्य' सबसे उचित धारणा, अर्थात जिसे सबको धारण करना चाहिए, यही धर्म है। दुर्खीम ने अपनी पुस्तक 'द एलीमेंटरी फॉर्म्स ऑफ रिलीजियस लाइफ' में धर्म की प्रकृति, उत्पत्ति के कारण, प्रभाव आदि के विषय में अत्यधिक विस्तृत तथा सूक्ष्म व्याख्या प्रस्तुत की है। उन्होनें यह प्रमाणित करने का प्रयास किया है कि धर्म सम्पूर्ण रूप से एक सामाजिक तथ्य या सामाजिक घटना है और इस अर्थ में धर्म नैतिक रूप से सामूहिक चेतना का प्रतीक ही है। मैक्स वेबर ने भी धर्म का गहनता से अध्ययन किया है। इन्होनें विश्व के छः प्रमुख धर्मों का व्यापक अध्ययन किया है और धर्म की समाजशास्त्रीय व्याख्या करने का भी प्रयास किया है। इन्होनें धर्म के संबंध में 'प्रोटेस्टेंट आचार और पूंजीवाद का विकास' नामक पुस्तक लिखी। वेबर ने धार्मिक कारकों को एक परिवर्तनीय तत्व के रूप में माना है। उन्होनें धर्म को अन्य आर्थिक तथा सामाजिक घटनाओं के साथ जोड़कर कार्य-कारण सम्बन्धों का विश्लेषण तथा निरूपण करने का प्रयास किया है। धर्म के संबंध में डॉ भीमराव आंबेडकर ने भी गहनता से अध्ययन किया है। इन्होनें धर्मांतरण के लिए विश्व के बड़े-बड़े धर्मों का गहनता से अध्ययन किया था। उनकी मान्यता थी कि बौद्ध धर्म का आधार एक महान क्रांति थी। बौद्ध धर्म अपने संघों के माध्यम से आम जनता के सरलीकरण तथा उसके प्रोत्साहन का केंद्र बना। आंबेडकर का मत था कि हिन्दू ग्रंथ किसी एकीकृत अथवा किसी गूँथे हुए दर्शन की अभिव्यक्तियाँ प्रस्तुत नहीं करते। आंबेडकर ने बुद्ध धर्म की एक नयी व्याख्या प्रस्तुत की। उन्होनें अपनी पुस्तक 'द बुद्धा एण्ड हिज धम्म' में

बौद्ध धर्म को बड़ी गहनता से स्पष्ट किया है। उनके अनुसार बौद्ध धम्म सभी धर्मों से श्रेष्ठ धम्म है।

अवधारणात्मक स्पष्टीकरण

धम्म- धम्म से तात्पर्य सदाचार से है जिसका अर्थ है जीवन के सभी क्षेत्रों में एक आदमी का दूसरे आदमी के प्रति अच्छा व्यवहार करना।

बौद्ध धम्म- बौद्ध धम्म का तात्पर्य है कि बुद्ध द्वारा किसी भी देवी-देवता के अस्तित्व को नही मानना तथा नैतिकता को परमोधर्म मानना।

विचारधारा- एक विचारधारा एक समूह या एक व्यक्ति के विचारों या विश्वासों का एक समूह है।

दलित- दलित से अभिप्राय ऐसे व्यक्ति या जाति तथा समुदाय से है, जो सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा धार्मिक अर्थात सभी क्षेत्रों में उपेक्षित और दबा हुआ है।

समस्या कथन

हिन्दू धर्म में असमानता, ऊंच-नीच की भावना, जातिवाद आदि का प्रचलन अन्य धर्मों की अपेक्षा अधिक पाया जाता था। इस असमानता, ऊंच-नीच, जातिवाद से बचने के लिए लोग अन्य धर्मों की ओर आकर्षित हुए। कुछ धर्मों में जबरन धर्मांतरण कराया गया था। कुछ लोग लालच दिखाकर लोगों को अपना धर्म अपनाने के लिए प्रेरित करते थे। हिन्दू समुदाय जाति व्यवस्था पर आधारित है। जिस कारण अभी भी दलित वर्ग के लोगों का स्थान निम्न बना हुआ है और उच्च हिन्दू इन पर लगातार अत्याचार और शोषण कर रहे हैं। निम्न जाति के लोगों को शिक्षा एवं अन्य समस्त मौलिक अधिकारों से वंचित रखने की परंपरा हिन्दू धर्म में शुरुआत से बनी हुई है। इस कारण लोग अन्य धर्मों की ओर आकर्षित होते हैं। इसी असमानता, ऊंच-नीच की भावना तथा दुर्व्यवहार के कारण डॉ भीमराव आंबेडकर ने अपना धर्म परिवर्तन किया था और अपने अनुयायियों को भी धर्म परिवर्तन करने की सलाह दी थी। वर्तमान समय में लोगों के अंदर पुनः धर्मांतरण करने की प्रबल इच्छा का जागृत हुई है। लेकिन धर्म परिवर्तन के पश्चात भी लोगों को समाज के उच्च वर्ग के लोगों के कटु वचनों का सामना करना पड़ता है। हिन्दू धर्म के लोग अन्य धर्म के लोगों को धर्म परिवर्तित लोग कहकर कटु वचन बोलते हैं। उन्हें हीन भावना से देखते हैं। इस धर्म परिवर्तन की प्रक्रिया में लोग बौद्ध धम्म की ओर अधिक प्रभावित होते हुए दिखाई दे रहे हैं। बौद्ध धर्म की ओर लोगों के झुकाव का मुख्य कारण बौद्ध धम्म में किसी भी प्रकार की भेदभाव की भावना का न होना है या फिर डॉ भीमराव आंबेडकर की विचारधारा के प्रभाव के कारण इस धम्म की

ओर झुकना है। इन प्रश्नों के अध्ययन के लिए इस शोध विषय का चुनाव किया गया है।

अध्ययन महत्व

सन 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में लगभग 1,21,08,54,977 जनसंख्या है। जिनमें से 84,42,972 बौद्ध हैं। डॉ भीमराव आंबेडकर के प्रभाव से बौद्ध धम्म अपनाने वालों को नव-बौद्ध की संज्ञा दी गई है। भारत में नव-बौद्धों की संख्या लगभग 34,123 है जो लिखित रूप से दर्ज की गई है लेकिन अलिखित रूप से आज भी दलित वर्ग के लोग बौद्ध धम्म को अपना रहे हैं। जिन्हें हिन्दू धर्म के लोग हिन्दू धर्म में गिनती करते हैं। धम्म परिवर्तन की यह प्रक्रिया निरंतर चलती जा रही है। इसका मुख्य कारण लोगों का हिन्दू धर्म से अलगाव कहा जा सकता है। बौद्ध धम्म पूर्णत वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा मानवता पर आधारित माना जाता है। बौद्ध धम्म में मानव कल्याण के सिद्धान्त पर बल देता है तथा इसे ग्रहण करने वाले व्यक्ति के अंदर स्वतः ही दूसरों के के प्रति अच्छा व्यवहार तथा नैतिक व्यवहार करने की प्रवृति उत्पन्न हो जाती है। यह अनुसंधान दलितों के अंदर हुए वैचारिक परिवर्तनों को समझने में सहायता प्रदान करेगा। यह भावी अनुसंधानकर्ताओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकता है। यह दलितों के संदर्भ में अध्ययन को अधिक व्यापक करने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

साहित्य पुनर्रावलोकन

1. **कुमारी (1990)** ने अपनी पुस्तक हिंदूइज़्म एंड बुद्धिज़्म में हिन्दू धर्म तथा बुद्ध धर्म के मध्य अंतर का अध्ययन किया है। इन्होनें अपने अध्ययन में स्पष्ट किया है कि हिन्दू धर्म सबसे प्राचीन धर्म है। जिसके प्रमाण के रूप में वेद, पुराण, आरण्यक, ब्राह्मण, गीता तथा रामायण आदि को शामिल किया जाता है। हिन्दू धर्म में कोई संस्थापक नही है। इसे ईश्वरीय रूप से रचित माना जाता है। बौद्ध धर्म की स्थापना तथागत गौतम बुद्ध ने की थी। लेखिका ने इसमें गौतम बुद्ध की जीवनी तथा बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार का भी गहनता से अध्ययन किया है। इसके प्रचार-प्रसार के लिए महात्मा बुद्ध ने विभिन्न जगह अपने उपदेश दिये थे। तथा उन उपदेशों को उनके शिष्यों ने लिपिबद्ध किया तथा उन्हें संरक्षित करके रखा।

2. **खोड़ावाल (1993)** ने डॉ भीमराव आंबेडकर द्वारा प्रस्तुत किए गए लेखों तथा भाषणों की खंड संख्या (1) का हिन्दी में पुनः सम्पादन किया है। इस खंड का शीर्षक भारत में जाति प्रथा एवं जाति प्रथा उन्मूलन है। इसमें प्रस्तुत किया

गया है कि जाति की समस्या सैद्धांतिक और व्यावहारिक रूप से एक विकराल समस्या है। यह समस्या जितना व्यावहारिक रूप से उलझी है, उतना ही इसका सैद्धांतिक पक्ष इन्द्रजाल है। इस संबंध में सर एच. रिजले का कहना है कि जाति का अर्थ है परिवारों का या परिवार समूहों का संगठन जिसका साझा नाम हो, जो किसी खास पेशे से सम्बद्ध हो, जो एक से पौराणिक पूर्वजों-पितरों के वंशज होने का दावा करता हो, एक जैसा व्यवसाय अपनाने पर बल देता हो।

3. **वेबर (2004)** ने बुद्धिस्ट रिलीजन एंड इंडोजिनम कल्चर में लिखा है कि आंबेडकर का बौद्ध धम्म की ओर मुड़ना राजनीतिक कारणों का परिणाम था। उनके विचार में, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अछूतों की जीवन स्थितियों को बदलने में असमर्थ और अनिच्छुक थी। उनके अनुसार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस उच्च वर्ण के लोगों का समर्थन करती थी। उच्च वर्ण के लोगों को ही सभी प्रकार की सुविधाएं प्राप्त थीं। अछूत वर्ग के लोगों को किसी भी प्रकार की कोई सुविधा प्रदान नहीं की गई। हिन्दू धर्म की भांति मुस्लिम धर्म में भी वर्ण व्यवस्था विद्यमान थी। इस प्रकार की घटनाओं के कारण ही डॉ भीमराव आंबेडकर ने बौद्ध धर्म को अपनाना उचित समझा। इसे चुनने के पीछे उन्होनें तीन कारणों को स्पष्ट किया है। उन्होनें कहा है कि मैं बौद्ध धर्म को इसलिए पसंद करता हूँ क्योंकि यह एक साथ तीन सिद्धान्त देता है, जो कोई अन्य धर्म नहीं देता। बौद्ध धर्म प्रज्ञा (फिर से अंधविश्वास और सुपर प्रकृतिवाद को समझना), कर्म (प्रेम) और समता (समानता) सिखाता है।

4. **आंबेडकर (2004)** ने 13 अक्टूबर, 1935 ने येओला, नासिक में एक भाषण दिया था उसमें उन्होनें यह घोषणा की, कि मैं आपको गंभीरता से आश्वासन देता हूँ, कि मैं हिन्दू नहीं मरूँगा। इस भाषण को उन्होनें 'मुक्ति के रूप में रूपान्तरण' के नाम से संबोधित किया। इसमें उन्होनें लोगों को संबोधित करते हुए कहा है कि आप धर्मांतरण के बारे में मेरे विचार सुनने के लिए यहाँ एकत्र हुए हैं। इसलिए मुझे लगता है कि इस विषय पर आपसे बात करना आवश्यक है। कुछ लोग अक्सर यह प्रश्न पूछते है कि हमें अपना धर्म परिवर्तन क्यों करना चाहिए? तब मैं उनसे पुनः प्रश्न पूछता हूँ कि हमें धर्म परिवर्तन क्यों नहीं करना चाहिए। इन सब बातों को स्पष्ट करने के लिए उन्होनें अपने जीवन की कुछ घटनाओं के उदाहरण प्रस्तुत किये। अंत में उन्होनें कहा है कि अपने लिए मैंने अपना निर्णय ले लिया

है। मेरा रूपान्तरण निश्चित है। उन्होनें स्पष्ट किया है कि मेरा रूपान्तरण किसी भौतिक लाभ के लिए नहीं है। मनुष्य धर्म के लिए नहीं है धर्म मनुष्य के लिए है। जो धर्म अशिक्षितों को अशिक्षित और गरीबों को गरीब रहने पर मजबूर करता है, वह धर्म नहीं बल्कि सजा है।

5. **सराओ (2004)** ने अपनी पुस्तक प्राचीन भारतीय बौद्ध धर्म: उद्भव, स्वरूप एवं पतन में लिखा है कि प्रारम्भ में कुछ विद्वानों की मान्यता थी कि बौद्ध धर्म विभिन्न प्रकार की प्राक-बौद्ध काल में उत्पन्न परिस्थितियों के विकास (जैसे- याज्ञिक कर्मकांडों द्वारा जीव हिंसा, अंधविश्वास तथा बौद्धिक गतिरोध का उत्पन्न होना, लिंग एवं जाति आधारित्त असमानता आदि) के विरुद्ध एक आंदोलन मात्र था। लेखक ने एस॰ राधाकृष्णन तथा डी॰आर॰ भंडारकर का कथन अपनी पुस्तक में प्रस्तुत किया है। जिसमें उनकी ऐसी मान्यता थी कि बौद्ध धर्म एक ऐसी नैतिक व्यवस्था थी, जो वैदिक धर्म में उत्पन्न कुरीतियों को दूर करने का प्रयास कर रही थी। इसमें बौद्ध धर्म को सभी विद्वानों ने अपने ढंग से परिभाषित किया है।
6. **पांडे (2006)** ने डॉ भीमराव आंबेडकर के जीवन वृत्त पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि वह एक महार जाति में पैदा हुए थे। उनकी जाति को अछूत जाति कहा जाता था। डॉ भीमराव आंबेडकर ने अपने पत्र में लिखा है कि स्वराज्य जैसा ब्राह्मणों का जन्मसिद्ध अधिकार है, वैसा ही वह महारों का भी है, यह बात कोई भी स्वीकार करेगा। इसलिए उच्च वर्गों के लोगों का यह प्रथम कर्तव्य है कि वे दलितों को शिक्षा देकर उनका मनोबल और सामाजिक स्तर ऊंचा करने की कोशिश करें। डॉ आंबेडकर ने अमेरिका, लंदन तथा जर्मनी में ज्ञान साधना के पश्चात इस रहस्य को जाना कि विद्या मनुष्य को शक्ति का मुकुट पहनाती है। जॉन डिवे के प्रभाव से डॉ आंबेडकर अस्पृश्यों और दलितों के उत्थान के लिए शिक्षा की प्रभावशीलता और उपयोगिता को समझ सके और उन्होनें इन वर्गों के उत्थान के लिए इनकी शैक्षणिक और सांस्कृतिक उन्नति को अत्यंत आवश्यक समझा।
7. **कर्दम (2007)** ने 'धर्मांतरण और दलित' में स्पष्ट किया है कि धर्म परिवर्तन क्यों किया जाना चाहिए इसकी क्या आवश्यकता है लोग क्यों इतनी ज्यादा संख्या में धर्मांतरण कर रहे हैं। धर्मांतरण से व्यक्ति अपनी इच्छानुसार अपने जीवन को संचालित कर सकता है। धर्म परिवर्तन की सोच में एक और बाधा खड़ी की जाती है। छुआछूत की जिंदगी

से तंग आकार धर्म परिवर्तन करने में कोई भलाई नहीं है, इस तरह का तर्क हिन्दू लोग देते हैं। उनका कहना है कि कहीं भी जाएँ वहाँ जातिभेद होता है। भारतवर्ष में अन्य धर्मों में भी ऊंच-नीचता के दीमक का प्रवेश हो चुका है। लेखक ने स्पष्ट किया है कि इस पाप के जिम्मेदार हिन्दू लोग ही है। मूल रूप से यह ऊंच-नीचता की घातक बीमारी हिंदुओं के द्वारा ही पली-बढ़ी है और उनकी चपेट में अन्य धर्मों के लोग भी आ गए हैं। लेखक ने एक स्थान पर लिखा है कि जब तक हम हिन्दू बने रहेंगे तब तक हमें हिंदुओं से छुआछूत के विरोध में, पानी की समस्या के लिए, रोटी की समस्या के लिए आपस में शादी के लिए लड़ाई लड़नी होगी। परंतु धर्म परिवर्तन कर लेने मात्र से ही सारी लड़ाई की जड़ें खत्म हो जाएंगी।

8. **अरुण (2007)** लेखक ने अपनी पुस्तक भारत में धर्म का स्वर्ण युग में बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध की जीवनी का गहनता से अध्ययन किया है। इसमें बोधिसत्व का समाधि प्रेम तथा बोधिसत्व के गृह त्याग के कारणों पर प्रकाश डाला गया है। बुद्ध की जब आलार कलाम से भेंट होती है तो वह कहते हैं कि इस प्रकार प्रव्रज्या लेने पर हितकारी मार्ग कौन-सा है, यह जानने के उद्देश्य से श्रेष्ठ, लोकोत्तर, शांत तत्व की खोज करता हुआ तुम्हारे पास आ पहुंचा। इस प्रकार उन्होनें उद्दक रामपुत्र से तथा बिंबसार राजा से भेंट की। इसमें लेखक ने स्पष्ट किया है कि बोधिसत्व को संबोधि ज्ञान वैशाखी पूर्णिमा की रात को प्राप्त हुआ। उस दिन सुजाता नाम की एक कुलीन युवती ने उन्हें भिक्षा के रूप में खीर प्रदान की थी। वैशाखी पूर्णिमा की रात को बोधिसत्व को तत्व ज्ञान प्राप्त हुआ था। उन्होनें अपनी योग साधना से अपनी इंद्रियों पर विजय प्राप्त की थी। इसी कारण उन्हें बुद्ध कहा जाने लगा।

9. **चौधरी (2008)** ने अपनी पुस्तक 'हाशिये की वैचारिकी' में शूद्रों की उत्पत्ति का गहनता से अध्ययन किया है। इन्होनें कहा है कि वर्ण व्यवस्था के उद्भव के संदर्भ में लिखित साक्ष्यों में सबसे पुराना वेद है और वेदों में भी सबसे प्राचीन ऋग्वेद है। शूद्रों को विभिन्न नामों से पुकारा जाता था। ब्रिटिशों ने इन्हें डिप्रेस्ड क्लास कहकर पुकारा था, ज्योतिवा फुले ने इन्हें अतिशूद्र की संज्ञा दी थी तथा डॉ भीमराव आंबेडकर ने इनके लिए 'अछूत' शब्द का उपयोग किया। भारतीय संविधान में अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति शब्द का प्रयोग किया गया है। ज्योतिवा फुले ने अपनी पुस्तक गुलामगिरी में लिखा है कि जब से इस देश में ब्राह्मणों की सत्ता कायम हुई है तब से शूद्र-अतिशूद्र समाज के लोग लगातार जुल्म और शोषण के शिकार रहे हैं। दलितों के साथ क्रूर व्यवहार किया जाता था।

10. **अग्रवाल तथा गोन्साल्विस (2010)** ने दलित और कानून नामक पुस्तक में लिखा है कि भारत में स्वतन्त्रता के लगभग छः दशक बाद भी जातिवाद, वर्णव्यवस्था, छुआछूत, जैसी सामाजिक बुराइयाँ गहरे जड़ें जमाये हुये हैं। उनका कहना है कि हमने ऐसे मामले देखे हैं, जहां उच्च जातियों ने अनुसूचित जातियों के लोगों के कुओं में मल-मूत्र फेंक दिया करते थे, परंतु न तो पुलिस कोई हस्तक्षेप करती थी, न ही न्यायपालिका। अनुसूचित जातियों द्वारा बनाए जा रहे मंदिर इस बहाने तोड़ दिये गए कि निर्माण की धूल से उच्च जातियों के निवास वाले इलाके प्रदूषित हो रहे थे। उन्होनें फिर एक जगह लिखा है कि हमने ऐसी भयानक घटनाएँ देखी हैं, जहां दलितों को सिर्फ इसलिए पीटा गया क्योंकि उन्होनें गाँव के साझा तालाब में नहाने या सूखे के समय उच्च जातियों के कुएं से पानी लेने का साहस किया।
11. **गौतम (2011)** लेखक ने भारतीय संस्कृति में दलितों के योगदान का गहनता से अध्ययन किया है। उनका कहना है कि जिस प्रकार अन्य वर्गों का भारतीय अर्थव्यवस्था में योगदान है उसी प्रकार दलितों का भी अर्थव्यवस्था में उतना ही योगदान है। लेखक ने कहा है कि जिस शिल्पकार ने अपनी कला के माध्यम से विश्व को आश्चर्यचकित किया है उसी को समाज में उपेक्षापूर्ण दृष्टि से देखा और उसे शूद्र वर्ग के अंतर्गत रखा। लेखक ने लिखा है कि भारतीय समाज व्यवस्था में व्याप्त सवर्ण-अवर्ण शब्दों में भी रंग-भेद अर्थात नस्लभेद की ध्वनि सुनाई देती है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में चार वर्षों में मानवीय रंग-भेद की स्पष्ट छाया आज दृष्टिगत नहीं है, परंतु सांस्कृतिक परिवेश में वर्ण-भेद अर्थात रंग-भेद आज भी बना हुआ है, विशेषकर दलित संदर्भ में।
12. **शर्मा (2012)** लेखिका ने गौतम बुद्ध के जीवन तथा बौद्ध धम्म की स्थापना पर प्रकाश डाला है। बौद्ध धम्म के मूल सिद्धान्त है- अनीश्वरवाद, अनात्मवाद तथा क्षणिकवाद। बुद्ध ने आठ अष्टांगिक मार्ग बताए है- सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाक, सम्यक कर्मात, सम्यक आजीव, सम्यक व्यायाम, सम्यक स्मृति तथा सम्यक समाधि। बौद्ध धर्म में अष्टांगिक मार्ग को बहुत महत्वपूर्ण माना गया है। बौद्ध इसे काल चक्र अर्थात समय का चक्र कहते हैं। समय और कर्म का अटूट संबंध है। कर्म चक्र समय के साथ सदा घूमता रहता है। जीवन में सिर्फ सुख ही प्राप्त करना हो तो कर्म के इस चक्र को समझना आवश्यक है।

13. **धर्मकीर्ति (2012)** ने पुस्तक में अपने बचपन से लेकर बड़ा होने तक, ग्रामीण जीवन से लेकर शहरी जीवन तक, शिक्षक से लेकर उच्च अधिकारी बनने तक, उच्च अधिकारी से सेवानिवृत होने तक अपना व्यक्तिगत अनुभव साझा किया है। लेखक ने कहा है कि मैं हिन्दू धर्म और पशुओं के धर्म में कोई अंतर नहीं मानता। जिस प्रकार पशु आपस में लड़ते-झगड़ते रहते हैं, उसी प्रकार हिन्दू दलितों और शोषितों पर अत्याचार और अन्याय करते हैं। उनका कहना है कि हिन्दू धर्म, धर्म नहीं है, बल्कि यह इंसानियत के खिलाफ हैवानियत का बहुत बड़ा षड्यंत्र है। यह प्रकृति और गणित के नियमों की भांति निरपेक्ष सत्य है कि इस धर्म में दलितों और शोषितों का कभी कल्याण नहीं हो सकता। इस कारण मैं इस धर्म से अटूट घृणा, ईर्ष्या रखता हूँ। हिन्दू धर्म का नीतिशास्त्र असमानता, गुलामी, शोषण, अत्याचार और अन्याय पर निर्भर करता है। इस सभी प्रकार की गुलामी, असमानता को खत्म करना होगा।
14. **शशि तथा अन्य (2013)** ने डॉ भीमराव आंबेडकर द्वारा प्रस्तुत किए गए लेखों तथा भाषणों की खंड संख्या (4) का पुनः सम्पादन किया है। इस खंड का शीर्षक डॉ आंबेडकर- साइमन कमीशन (भारतीय सांविधिक आयोग) के साथ है। इस खंड में डॉ आंबेडकर द्वारा बताया गया था कि ब्रिटिश शासन के दौरान 1815 में बंबई शिक्षा समिति की स्थापना हुई। इस समिति के स्कूलों के लिए सूरत और थाणे के स्थानीय बच्चों को प्रोत्साहित किया। सन 1820 के प्रारम्भ में बंबई में स्थानीय बच्चों के लिए चार पृथक स्कूल खोले गए। 24 अगस्त, 1855 में अहमद नगर के कुछ निवासियों से एक याचिका प्राप्त हुई जिसमें छोटी जातियों की शिक्षा के लिए एक स्कूल की स्थापना करने और उसके लिए बनाए गए नए नियमों के अनुसार अध्यापकों को आधा वेतन देने का अनुरोध किया गया था। इस प्रकार इस वक्तव्य में दलितों तथा पिछड़े वर्गों की शिक्षा के क्षेत्र पर बल दिया गया।
15. **ज्ञानसागर (2014)** ने अपनी पुस्तक 'आंबेडकर और बुद्ध धम्म' में लिखा है कि भीमराव आंबेडकर जी अपने समय के सर्वाधिक विशिष्ट व्यक्तियों में से एक थे और उनके जीवन की कहानी इस बात की कहानी है कि एक प्रतिभावान और उत्कृष्ट चरित्र का व्यक्ति अपने जीवन में उन सब बाधाओं को पार करते हुए सफल हुआ जो उस समय के अत्याचारी समाज ने उनके रास्ते में पैदा की थीं। लेखक ने कहा है कि भले ही भीमराव आंबेडकर केवल सात सप्ताह बुद्धिस्ट रहे, परंतु थोड़े से समय में ही उन्होनें अशोक के बाद भारत में बौद्ध धर्म के लिए किसी अन्य भारतीय से

अधिक कार्य किया। उनकी मृत्यु के समय तक तीन चौथाई मिलियन (साढ़े सात लाख) बौद्ध थे।

16. **बौद्ध (2018)** ने बाबा साहब के प्रथम शोध प्रबंध को हिन्दी भाषा में रूपांतरित किया है। प्रथम शोध प्रबंध जिसका नाम कास्ट इन इंडिया देयर मेकेनिस्म जेनेसिस एंड डव्लपमेंट था। इसमें उन्होनें जाति व्यवस्था के बारे में विस्तृत वर्णन किया है। लेखक ने लिखा है कि सुविख्यात नृवंशशास्त्रियों के मतानुसार भारतीय समाज आर्यों, द्रविड़ों, मंगोलों और सिथियनों का मिश्रण है। ये सब लोग सदियों पहले जब कबायली जिंदगी व्यतीत कर रहे थे, तब अपनी-अपनी संस्कृतियों के साथ भारत पहुंचे। अपने से पहले आए लोगों को पराजित कर इन जातियों ने अपने लिए जगह बनाई और काफी लड़ाई-झगड़े के बाद शांतिप्रिय पड़ोसियों की भांति यहाँ बस गए। नृवंशशास्त्रीय आधार पर सभी समाज विषम-जातीयता वाले होते हैं।

17. **बाली (2018)** ने अपनी पुस्तक 'डॉ आंबेडकर की दृष्टि में धर्म' में लिखा है कि डॉ आंबेडकर ने रिलीजन यानि मज़हब को रद्द किया और बुद्ध धम्म को अपनाया। बुद्ध धम्म रिलीजन से मूलरूप से सर्वथा भिन्न है। डॉ आंबेडकर ने रिलीजन और बुद्ध धम्म का तुलनात्मक अध्ययन किया है। बाली ने लिखा है कि डॉ आंबेडकर ने दुनिया के तीन बड़े धर्मों- हिन्दूवाद, इस्लाम और ईसाइयत का परीक्षण करके उनको रद्द किया और अंत में उन्होनें 14 अक्टूबर, 1956 को नागपुर में बुद्ध धम्म को अपनाया। उनके अनुसार "बुद्ध ने कहा है कि उनके धम्म का आत्मा-परमात्मा से कुछ सरोकार नहीं है। उनके धम्म को मरने के बाद क्या होता है, इससे कुछ सरोकार नहीं है। उनके धम्म को कर्मों-कांडों के क्रिया कलापों से भी कुछ संबंध नहीं है। बुद्ध के धम्म का केंद्र बिन्दु है इंसान और इस पृथ्वी पर रहते हुए इंसान का इंसान के प्रति क्या कर्तव्य होना चाहिए।

18. **बौद्ध (2018)** ने 'अछूत कौन और कैसे?' का हिन्दी रूपान्तरण किया है। इसमें उन्होनें अछूत कौन है और अछूतपन की उत्पत्ति कैसे हुई, इसका विस्तृत अध्ययन किया है। स्वामी अछूतानन्द जी के अनुसार अछूत लोग भारत के आदि-निवासी और नैसर्गिक स्वामी हैं। विदेशी और विधर्मी वैदिक आर्य भूतकाल में शरणार्थी रूप में इस देश में आए और छल-कपट से यहाँ अपना राज्य स्थापित कर लिया। यहाँ के पुण्यवान, सत्यवादी राजाओं को शक्ति से नहीं, छल-कपट से पराजित कर उन्हें असुर, दैत्य और राक्षस बनाया। उन्होनें दलित साहित्य को नष्ट किया और अपनी

सामाजिक व्यवस्था के द्वारा शूद्र और अछूत बनाकर अपना बेदामों का गुलाम बनाया।

19. **शास्त्री (2018)** लेखक ने मनुस्मृति: कुल्लूकभट्टविरचित मन्वर्थमुक्तावली संस्कृत टीका का हिन्दी अनुवाद किया है। लेखक ने इसमें मनुस्मृति के श्लोकों का हिन्दी में सरलता से पढ़ने के लिए उपयोग किया है। मनुस्मृति में मनु द्वारा उच्चारित किए गए श्लोकों का संग्रहण किया गया है। मनु के द्वारा संसार की उत्पत्ति से लेकर मनुष्यों के कार्यों का भी निर्धारण किया है। मनुस्मृति की श्लोक संख्या ८८, ८९, ९०, ९१ तथा ९२ में स्पष्ट किया गया है कि पढ़ना-पढ़ाना, यज्ञ करना-कराना, दान देना-लेना आदि कार्य ब्राह्मणों द्वारा किया जाएगा। प्रजा की रक्षा करना, दान देना, यज्ञ करना तथा अध्ययन करना क्षत्रियों का कार्य बताया गया। पशुओं की रक्षा करना, दान देना, यज्ञ करना, अध्ययन करना तथा व्यवसाय करना आदि वैश्य वर्ग का कार्य कहा गया। इन सभी वर्गों के लोगों की निस्वार्थ भाव से सेवा करना ही शूद्रों का एकमात्र कार्य था। उन्हें किसी भी प्रकार की अन्य सुविधा नही प्राप्त थी।

20. **महाथेरो (2019)** लेखक ने अपनी पुस्तक 'मनुस्मृति जलाई गई क्यों?' में बताया है कि बाबा साहब ने मनुस्मृति को क्यों जलाया। आखिर यही एक पुस्तक को क्यों जलाया? अकेली मनुस्मृति ही नहीं बल्कि अन्य ऐसे ग्रन्थों की भी कमी नहीं, जिनमें शूद्रों तथा स्त्रियों को हेय दृष्टि से ही नहीं, सम्पूर्ण "ताड़न के अधिकार" की दृष्टि से देखा गया है। सृष्टि कैसे बनी और अछूतपन की शुरुआत कैसे हुई इस विषय पर लेखक ने विशेष कार्य किया है। डॉ भीमराव आंबेडकर ने मनुस्मृति का गहन अध्ययन करके पाया कि इसमें दलितों के हित की कोई चर्चा नही है। मनुस्मृति में दलितों का एक ही कार्य निश्चित किया गया था कि अपने उच्च तीनों वर्णों की सेवा करना। इसके साथ ही साथ स्त्रियों को भी दोयम दर्जा प्राप्त था। उनके लिए केवल एक ही कार्य सुनिश्चित किया गया कि अपने पति की निस्वार्थ भाव से सेवा करना। शूद्रों तथा स्त्रियों को शिक्षा प्राप्त करने का भी अधिकार प्राप्त नहीं था।

21. **उपाध्याय (2019)** ने अपनी पुस्तक विश्व के विविध धर्म में लिखा है कि भगवान बुद्ध ने बौद्ध धर्म की स्थापना की है। इनका जन्म लुम्बिनी वन में वैशाख शुक्ल पूर्णिमा को हुआ था। एक बार जब रथ में राजमहल से बाहर जाते हुए उन्होनें एक वृद्ध मनुष्य को, एक रोगग्रस्त पुरुष को, एक मृत देह को और एक संन्यासी को देखा। इससे इन्हें पता चला कि हर एक मनुष्य को बुढ़ापे से, रोगों से और मृत्यु से अवश्य दुख भोगना पड़ता है। इन घटनाओं का उनके

जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। इसके पश्चात इन्होनें गृह त्याग कर दिया और दुखों से निवृति का निर्वाण खोजने निकाल गए। ज्ञान की प्राप्ति के पश्चात इन्हें बुद्ध कहा जाने लगा और इनके द्वारा स्थापित धर्म को बुद्ध धम्म कहा गया।

22. **कबीरपंथी (2020)** ने 'बाबा साहब ने धर्मांतरण क्यों किया?' नामक एकांकी में लिखा है कि बाबा साहब ने यह घोषणा की थी कि मैं हिन्दू धर्म में पैदा तो हुआ हूँ, लेकिन इस धर्म में मरूँगा नहीं। लेखक का कहना है कि उनका इस एकांकी को लिखने का एक ही उद्देश्य है कि लोग जाने कि जिन्हें धर्म माना जा रहा है वे धर्म नहीं हैं। यदि विश्व में वास्तविक रूप से धर्म है तो वो बौद्ध धम्म ही है। दिनांक 13 अक्टूबर, 1935 को येवला में बाबा साहब द्वारा ज्योंही यह घोषणा की गई कि "हिन्दू धर्म में पैदा होना मेरी मजबूरी थी, लेकिन मैं इस धर्म में रहकर मरूँगा नहीं"। इस घोषणा के सुनते ही सभी धर्मों के धर्माचार्य डॉ भीमराव आंबेडकर के पास आने लगे। सभी अपने-अपने धर्मों की अच्छी-अच्छी बातें बताने लगे।

23. **नवीन एवं कुमार (2020)** ने भारत के प्राचीन इतिहास का गहनता से अध्ययन किया है। इसमें लेखक ने मानव विकास के काल का वर्णन किया है। बौद्ध धर्म की उत्पत्ति विकास तथा उनके पतन को स्पष्ट किया है। इसमें लेखक ने स्पष्ट किया है कि उत्तर वैदिक समाज स्पष्टतः चार वर्णों में विभाजित था- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र। प्रत्येक वर्ण का पेशा निर्धारित कर दिया गया था। वर्ण जन्म पर आधारित नहीं था। दोनों उच्च वर्णों ने तथा कथित निम्न वर्णों को किनारे करते हुए शक्ति, प्रतिष्ठा और विशेषाधिकारों पर कब्जा कर लिया। जिसका वर्ण जितना ऊंचा था, उसका महत्व भी उतना ही था, किसी अपराध के लिए जिस अपराधी का वर्ण जितना निम्न था, उसके लिए उतने ही कठोर दंड का प्रावधान था। इस प्रकार की व्यवस्था से लड़ने के लिए जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म एक शक्तिशाली धर्मों के रूप में सामने आए।

24. **भगत (2021)** लेखक ने डॉ भीमराव आंबेडकर द्वारा लिखी गई पुस्तक 'हू वर शूद्रास' का हिन्दी अनुवाद किया है। शूद्रों के इतिहास का गहनता से अध्ययन किया गया है। बाबा साहब के जीवन चरित्र का वर्णन किया गया है। शूद्रों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया गया है। उन्होनें इस ग्रंथ में यह स्पष्ट किया है कि शूद्र पहले शूद्र

नहीं थे, वे एक क्षत्रिय थे। शूद्र लोग राज्यकर्ता थे। सुदास, पुरूख, निम्मी, नहुष आदि शूद्र क्षत्रिय राजा थे। क्षत्रियों और ब्राह्मणों में वैरभाव था।

25. **मलिक (2021)** ने अपने लेख ज्ञान एवं बौद्धिक विमर्श में डॉ आंबेडकर की उपस्थिति: एक समीक्षात्मक मूल्यांकन में डॉ भीमराव आंबेडकर की वर्तमान में प्रासंगिकता का अध्ययन किया है। इसमें उन्होनें लिखा है कि आंबेडकर के संदर्भ में यह बात लागू होती है कि जैसे बुद्धिजीवियों, समाज ने, राज्य ने और विद्वानों ने बहुत कुछ ढ़क दिया है, डॉ भीमराव आंबेडकर का बहुत इतिहास चुपचाप धूमिल होने दिया गया है। जब राजनीति ने आंबेडकर को सिर्फ दलितों का नेता बनाकर रख दिया हो तो आज जरूरत इस बात की है कि आंबेडकर का जो पक्ष इतिहास में दबा हुआ है उसे भी खोज लें। इस लेख में स्पष्ट किया गया है कि आज 21वीं सदी में जब आंबेडकर पर वैचारिक बहस और विमर्श किया जाता है उसमें हमें यह बात याद रखनी चाहिए कि आंबेडकर केवल प्रतीक भर नही हैं, वे पूजा की वस्तु भी नही हैं, बल्कि वे परिवर्तन, भाईचारा, धर्मनिरपेक्षता, वैज्ञानिक चिंतन के जुझारू योद्धा थे। सामाजिक बराबरी, सद्भाव, धर्मनिरपेक्षता, भाईचारा आंबेडकर के विचार के बुनियादी लक्षण हैं। भीमराव आंबेडकर का पूरा जीवन संघर्ष सामाजिक-आर्थिक असमानता के प्रतिरोध में था।

26. **श्रमण (2022)** ने अपने लेख बहुजनों को सांस्कृतिक नवनिर्माण की दिशा में काम करने की जरूरत में लिखा है कि डॉ आंबेडकर ने लिखा है कि ब्राह्मणों ने किस तरह बौद्ध एवं जैन धर्म के आचरण एवं नीतिशास्त्र को अपनाकर श्रमण धर्मावलम्बी जनता में स्वयं को स्वीकृत बनाया। लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि अब जो नई जानकारी प्रकाश में आ रही है। उससे यह साफ पता चलता है कि बुद्ध का वैष्णव धर्म या विष्णु से कोई संबंध नहीं है। शिव असल में जनजातीय कबीलों के देवता हैं, शैव मत वज्रयान के बाद में आया है। राम और कृष्ण असल में बौद्ध जातक कथाओं के चरित्र हैं, जिन्हें बाद की शताब्दियों में ब्राह्मण ग्रन्थों में अपनी आवश्यकता के हिसाब से काट-छांटकर चित्रित किया गया है।

27. **सिद्धार्थ (2022)** ने अपने लेख संघ की अखंड भारत की घोषणा और डॉ आंबेडकर में लिखा है कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर संघचालक मोहन भागवत ने 13 अप्रैल को हरिद्वार में एक भाषण दिया जिसमें उन्होनें कहा कि

20-25 सालों में अखंड भारत का निर्माण होगा, जिसका स्वप्न विवेकानंद और महर्षि अरविंद ने देखा था। उन्होनें यह भी कहा कि 'भारत लगातार प्रगति के पथ पर बढ़ रहा है। इसे रोकने वाला कोई नहीं है और जो इसके रास्ते में जो भी आयेगा वो मिट जाएगा। हिन्दू राष्ट्र की व्याख्या करते हुए उन्होनें बताया कि सनातन धर्म ही हिन्दू धर्म है। लेखक ने स्पष्ट किया है कि डॉ भीमराव आंबेडकर ने साफ शब्दों में कहा था कि अगर हिन्दू राष्ट्र बन जाता है तो निस्संदेह इस देश के लिए एक भारी खतरा उत्पन्न हो जाएगा। हिन्दू धर्म एक ऐसी राजनैतिक विचारधारा है, जो पूर्णत लोकतन्त्र विरोधी है तथा मानवता विरोधी भी है।

साहित्य समीक्षा के माध्यम से कहा जा सकता है कि बौद्ध धर्म की स्थापना तथागत गौतम बुद्ध ने की थी। लेखिका ने इसमें गौतम बुद्ध की जीवनी तथा बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार का भी गहनता से अध्ययन किया है। इसके प्रचार-प्रसार के लिए महात्मा बुद्ध ने विभिन्न जगह अपने उपदेश दिये थे। तथा उन उपदेशों को उनके शिष्यों ने लिपिबद्ध किया तथा उन्हें संरक्षित करके रखा। लेखक ने एस॰ राधाकृष्णन तथा डी॰आर॰ भंडारकर का कथन अपनी पुस्तक में प्रस्तुत किया है। जिसमें उनकी ऐसी मान्यता थी कि बौद्ध धर्म एक ऐसी नैतिक व्यवस्था थी, जो वैदिक धर्म में उत्पन्न कुरीतियों को दूर करने का प्रयास कर रही थी। इसमें बौद्ध धर्म को सभी विद्वानों ने अपने ढंग से परिभाषित किया है। बौद्ध धम्म के मूल सिद्धान्त है- अनीश्वरवाद, अनात्मवाद तथा क्षणिकवाद। बुद्ध ने आठ अष्टांगिक मार्ग बताए है- सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाक, सम्यक कर्मात, सम्यक आजीव, सम्यक व्यायाम, सम्यक स्मृति तथा सम्यक समाधि। बौद्ध धर्म में अष्टांगिक मार्ग को बहुत महत्वपूर्ण माना गया है। भारत में जाति की समस्या सैद्धांतिक और व्यावहारिक रूप से एक विकराल समस्या है। यह समस्या जितना व्यावहारिक रूप से उलझी है, उतना ही इसका सैद्धांतिक पक्ष इन्द्रजाल है। डॉ भीमराव आंबेडकर ने अपने पत्र में लिखा है कि स्वराज्य जैसा ब्राह्मणों का जन्मसिद्ध अधिकार है, वैसा ही वह महारों का भी है, यह बात कोई भी स्वीकार करेगा। इसलिए उच्च वर्गों के लोगों का यह प्रथम कर्तव्य है कि वे दलितों को शिक्षा देकर उनका मनोबल और सामाजिक स्तर ऊंचा करने की कोशिश करें। डॉ आंबेडकर ने अमेरिका, लंदन तथा जर्मनी में ज्ञान साधना के पश्चात इस रहस्य को जाना कि विद्या मनुष्य को शक्ति का मुकुट पहनाती है। डॉ आंबेडकर ने अन्य धर्मों और बुद्ध धम्म का तुलनात्मक अध्ययन किया है। बाली ने लिखा है कि डॉ आंबेडकर ने दुनिया के तीन बड़े धर्मों-

हिन्दूवाद, इस्लाम और ईसाइयत का परीक्षण करके उनको रद्द किया और अंत में उन्होनें 14 अक्टूबर, 1956 को नागपुर में बुद्ध धम्म को अपनाया। उनके अनुसार "बुद्ध ने कहा है कि उनके धम्म का आत्मा-परमात्मा से कुछ सरोकार नहीं है।

अध्ययन के उद्देश्य

- डॉ भीमराव आंबेडकर की बौद्ध धम्म विचारधारा का अध्ययन करना।
- दलितों में बौद्ध धम्म के प्रति बढ़ते आकर्षण के कारणों का अध्ययन करना।
- डॉ भीमराव आंबेडकर की बौद्ध धम्म विचारधारा का दलितों पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
- दलितों के अंदर हुए वैचारिक परिवर्तनों का अध्ययन करना।
- धम्म ग्रहण के उपरांत दलितों के समक्ष उत्पन्न विभिन्न चुनौतियों का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

- डॉ भीमराव आंबेडकर ने बौद्ध धम्म में वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा मानव कल्याण के कारण इसका प्रचार-प्रसार किया था।
- दलितों का बौद्ध धम्म के प्रति आकर्षण के मुख्य कारण वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवता तथा शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है।
- डॉ भीमराव आंबेडकर की बौद्ध धम्म विचारधारा का दलितों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।
- दलितों के अंदर शिक्षा के प्रति जागरूकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नैतिकता तथा सदाचार जैसे वैचारिक परिवर्तन हुए हैं।
- धम्म ग्रहण के उपरांत दलितों को विभिन्न सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

पद्धतिशास्त्र

पद्धतिशास्त्र का तात्पर्य उन सभी तरीकों और तकनीकों के रूप में समझा जा सकता है, जिनका उपयोग अनुसंधान के लिए किया जाता है। शाब्दिक रूप में पद्धतिशास्त्र का अर्थ होता है, विधियों का विज्ञान। इसमें चयन संरचना, प्रक्रिया और विधियों के प्रयोग के निर्देश, मानक व सिद्धान्त निहित होते हैं। इसी प्रकार प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए आगरा जनपद के दलित (अनुसूचित जाति) को चयनित किया जाएगा।

(सारणी 1: आगरा जनपद की अनुसूचित जाति की जनसंख्या (2011 की जनगणना के अनुसार)

क्षेत्र	पुरुष	स्त्री
ग्रामीण	270558	234582
नगरीय	261083	225102
कुल	**531641**	**459684**

(स्त्रोत- http://censusindia.gov.in)

शोध प्ररचना

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णात्मक एवं व्याख्यात्मक अनुसंधान अभिकल्प का प्रयोग किया जाएगा। व्याख्यात्मक अनुसंधान अभिकल्प का प्रमुख उद्देश्य विषय अथवा समस्या के संबंध में यथार्थ तथ्यों का सूचनाओं के आधार पर व्याख्यात्मक विवरण प्रस्तुत करना होता है।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु आगरा जनपद का चयन किया गया है। आगरा जनपद में 2011 की जनगणना के अनुसार 4,418,797 जनसंख्या है। जिसके अंतर्गत अनुसूचित जाति जनसंख्या 9,91,325 है। शोध कार्य के लिए आगरा जनपद के ग्रामीण क्षेत्र के 15 ब्लॉक में से 3 ब्लॉक **बाह, शमसाबाद एवं अछनेरा** तथा नगरीय क्षेत्र से 3 वार्ड **मंटोला, जगदीशपुरा एवं नराइच** का चयन किया जाएगा।

निदर्शन- दैव निदर्शन विधि एवं उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि के आधार पर इकाइयों का चयन किया जाएगा। चयनित ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की अनुसूचित जाति के बौद्ध धम्म अनुयायियों की कुल जनसंख्या 13,201 है। जिसमें से 3% अर्थात 396 उत्तरदाताओं का चयन करके अध्ययन को सफल बनाने का प्रयास किया जाएगा।

अध्ययन संयंत्र

प्रस्तुत अध्ययन में अवलोकन व साक्षात्कार अनुसूची का अध्ययन संयंत्र के रूप में प्रयोग किया जाएगा तथा सारणीयन का प्रयोग किया जाएगा।

तथ्य संग्रहण की प्रविधियाँ

प्रस्तुत शोध में तथ्यों के संकलन हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों का प्रयोग किया जाएगा। प्राथमिक स्त्रोतों में साक्षात्कार अनुसूची, अवलोकन तथा द्वितीयक स्त्रोतों में पुस्तकों, पत्रिकाओं, शोध-पत्र व इन्टरनेट का प्रयोग किया जाएगा।

तथ्यों का वर्गीकरण, सारणीयन, विश्लेषण एवं सामान्यीकरण

प्रस्तुत अध्ययन में तथ्यों का वर्गीकरण करके उसको सारणी द्वारा प्रस्तुत किया जाएगा। तत्पश्चात तथ्यों का चित्रमय प्रदर्शन किया जाएगा तथा विश्लेषण के बाद प्राप्त निष्कर्षों का सामान्यीकरण किया जाएगा।

प्रस्तावित अध्ययन अध्याय

प्रथम अध्याय

- प्रस्तावना
- अवधारणात्मक स्पष्टीकरण
- शोध की समस्या
- अध्ययन महत्व
- साहित्य पुनर्रावलोकन
- अध्ययन के उद्देश्य
- अध्ययन की परिकल्पना

द्वितीय अध्याय

- पद्धतिशास्त्र
- शोध प्ररचना
- अध्ययन का क्षेत्र
- निदर्शन
- अध्ययन के संयंत्र
- अध्ययन शोध पद्धति
- तथ्य संग्रहण की प्रविधियाँ
- तथ्यों का वर्गीकरण, सारणीकरण, विश्लेषण एवं सामान्यीकरण

तृतीय अध्याय

- डॉ भीमराव आंबेडकर की बौद्ध धम्म विचारधारा।

चतुर्थ अध्याय

❖ दलितों में बौद्ध धम्म के प्रति बढ़ते आकर्षण के कारण।

पंचम अध्याय

❖ डॉ भीमराव आंबेडकर की बौद्ध धम्म विचारधारा का दलितों पर पड़ने वाले प्रभाव।

षष्टम अध्याय

❖ दलितों के अंदर हुए वैचारिक परिवर्तन।

सप्तम अध्याय

❖ धम्म ग्रहण के उपरांत दलितों के समक्ष उत्पन्न विभिन्न चुनौतियां।

अष्टम अध्याय

❖ परिणाम एवं सुझाव

नवम अध्याय

❖ निष्कर्ष एवं उपसंहार

संदर्भ सूची

1. आंबेडकर, बी. आर. (1970). भगवान बुद्ध और उनका धम्म. भारतीय बौद्ध शिक्षा परिषद. श्रावस्ती।
2. कुमारी, ए. (1990). हिंदूइज़्म एंड बुद्धिज़्म. विश्वविद्यालय प्रकाशन. नई दिल्ली।
3. खोड़ावाल, एस. (1993). भारत में जातिप्रथा एवं जातिप्रथा-उन्मूलन. *बाबा साहेब डॉ आंबेडकर सम्पूर्ण वाङ्मय*, (वॉल-1), डॉ आंबेडकर प्रतिष्ठान कल्याण मंत्रालय भारत सरकार. नई दिल्ली।
4. शशि तथा अन्य (1994). डॉ आंबेडकर साइमन कमीशन के साथ. *बाबा साहेब डॉ आंबेडकर सम्पूर्ण वाङ्मय*, (वॉल-4), डॉ आंबेडकर प्रतिष्ठान कल्याण मंत्रालय भारत सरकार. नई दिल्ली।
5. सराओ, के. टी. एस. (2004). प्राचीन भारतीय बौद्ध धर्म: उद्भव, स्वरूप एवं पतन. द बुद्धा एजुकेशन फाउंडेशन. नई दिल्ली।

6. पांडे, पी. (2006). डॉ आंबेडकर और पंडित दीनदयाल. एबीडी पब्लिकेशन. नई दिल्ली।

7. कर्दम, जे. पी. (2007). धर्मांतरण और दलित. सूरज प्रकाशन. दिल्ली।

8. अरुण (2007). भारत में धर्म का स्वर्ण युग. शलभ पब्लिशिंग हाउस. मेरठ।

9. बेचैन, एस. एस. (2008). मूकनायक. गौतम बुक सेंटर. दिल्ली।

10. बेचैन, एस. एस. (2008). बहिष्कृत भारत. गौतम बुक सेंटर. दिल्ली।

11. चौधरी, यू. एस. (2008). हाशिये की वैचारिकी. अनामिका पब्लिशर्स. नई दिल्ली।

12. अग्रवाल, जी. और गोन्सालिवस, के. (2010). दलित और कानून. ह्यूमन राइट्स लॉ नेटवर्क. नई दिल्ली। www.hrln.org

13. गौतम, एस. एस. (2011). भारतीय संस्कृति में दलितों और शूद्रों का योगदान. गौतम बुक सेंटर. दिल्ली।

14. धर्मकीर्ति. (2012). मैंने हिन्दू धर्म क्यों छोड़ा?. सम्यक प्रकाशन. नई दिल्ली।

15. रामचन्द्र. (2012). दलित साहित्य: आशय, आंदोलन और अवधारणा. सम्यक प्रकाशन. नई दिल्ली।

16. शर्मा, एम. (2012). गौतम बुद्ध. वंदना पब्लिकेशन. नई दिल्ली।

17. सिंह, उमराव (2013). शूद्र कौन थे. *बाबा साहेब डॉ आंबेडकर सम्पूर्ण वाङ्मय* (वॉल-13), डॉ आंबेडकर प्रतिष्ठान कल्याण मंत्रालय भारत सरकार. नई दिल्ली।

18. ज्ञानसागर, डी. (2014). आंबेडकर और बुद्ध धम्म. सम्यक प्रकाशन. नई दिल्ली।

19. बौद्ध, एस. पी. (2018). भारत में जातियाँ: उनकी संरचना, उत्पत्ति और विस्तार. सम्यक प्रकाशन. नई दिल्ली।

20. बाली, एल. आर. (2018). डॉ. आंबेडकर की दृष्टि में धर्म. भीम पत्रिका पालिकेशन्स. जालंधर।

21. बौद्ध, जे. के. (2018). अछूत कौन और कैसे?. सम्यक प्रकाशन. नई दिल्ली।

22. शास्त्री, आर. (2018). मनुस्मृति: कुल्लूकभट्टविरचित मन्वर्थमुक्तावली संस्कृत टीका एवं हिंदी भाषानुवाद.

विद्यानिधि प्रकाशन.

23. कुमारी, एम. (2019). प्राचीन भारत में दलित-एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. *इंटरनेशनल जनरल ऑफ एप्लाइड रिसर्च*, 5(1), 258-260

24. महाथेरो, बी. के. (2019) मनुस्मृति जलाई गई क्यों?. सम्यक प्रकाशन. नई दिल्ली।

25. उपाध्याय, जे. (2019). विश्व के विविध धर्म. दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट. आगरा।

26. कबीरपंथी, आर. (2020). बाबा साहब ने धर्मांतरण क्यों किया? (एकांकी). सम्यक प्रकाशन. नई दिल्ली।

27. नवीन, डी और कुमार, डी. (2020). भारत का प्राचीन इतिहास. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस. नई दिल्ली।

28. भगत, एस. (2021). शूद्र कौन थे?. सुधीर प्रकाशन. वर्धा. महाराष्ट्र।

29. मलिक, वी. बी. (2021). ज्ञान एवं बौद्धिक विमर्श में डॉ. आंबेडकर की उपस्थिति: एक समीक्षात्मक मूल्यांकन. *राधा कमल मुखर्जी: चिंतन परंपरा (नेशनल पीर रिव्यूड जनरल ऑफ सोशल साइंसेस)*, 23(2), 1-10

30. श्रमण, एस. (2022). बहुजनों को सांस्कृतिक नवनिर्माण की दिशा में कम करने की जरूरत. *अखंड भारत और डॉ. आंबेडकर. दलित दस्तक*, 10(12), 8-9 www.dalitdastak.com

31. सिद्धार्थ. (2022). संघ की अखंड भारत की घोषणा और डॉ. आंबेडकर. *अखंड भारत और डॉ. आंबेडकर. दलित दस्तक*, 10(12), 14-17 www.dalitdastak.com

32. श्रीकृष्ण, ए. (2022). धम्मचक्र प्रवर्तन सुत्त बुद्ध और उनका मध्यम मार्ग. *अखंड भारत और डॉ. आंबेडकर. दलित दस्तक*, 10(12), 22-28 www.dalitdastak.com

33. रावत, वी. बी. (2022). दलितों की बढ़ती चेतना और बौद्ध संस्कृति. *अखंड भारत और डॉ. आंबेडकर. दलित दस्तक*, 10(12), 18-19 www.dalitdastak.com

34. Weber, E. (2004). Buddhist Religion and Indogenous Culture. *Fifth Dr Ambedkar Memorial Annual*

Lecture. Dr Ambedkar chair in sociology. CSS school of social sciences, JNU, New Delhi.

35. Ambedkar, B. R. (2004). Conversion as Emancipation. Critical quest. New Delhi.

36. http://censusindia.gov.in/